B.A. III
IV paper

B.A. Hons Part III Q.IV Paper

Q. द० पू० एशिया के अध्ययन के मुख्य स्रोतों का वर्णन करें।
A study of Main sources of S.E.A.

Ans: → द० पू० ए० के देशों में भारत के सांस्कृतिक साम्राज्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र था। भारतीय संस्कृति का प्रवेश ई० की प्रथम शताब्दी में हुआ जिसका श्रेय ब्राह्मणों, राजकुमारों तथा व्यापारियों का था। उन्होंने आत्मविश्वास और सद्भावना का आश्रय लेकर वहाँ की जनता से केवल सम्पर्क ही स्थापित नहीं किया, वरन छोटे छोटे उपनिवेश बनाये जो आगे चलकर विशाल साम्राज्य में परिणत हो गया। इसी कारण उस विशाल साम्राज्य को बृहत्तर भारत के नाम से सम्बोधित किया जाता था। इस विशाल साम्राज्य में वर्मा, थाइलैंड, हिन्द, चीन, मलाया, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बालि इत्यादि हिन्द और प्रशान्त सागर के बीच के द्वीप सम्मिलित थे।

आज भी भारतीय द्वारा निर्मित कला-कृतियाँ तथा प्राप्त अभिलेख प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का पहचान के रूप में वर्तमान है। प्राचीन द० पू० ए० के इतिहास के साधनों की कमी नहीं है। विभिन्न साधनों के माध्यम से द० पू० ए० के इतिहास की जानकारी प्राप्त करते हैं।

(1) साहित्यिक साधन :—

(a) पालि साहित्य → पालि साहित्य में जातक की कथाएँ प्रसिद्ध और प्राचीन है। इसमें सुवर्ण अथवा सुवर्णभूमि का उल्लेख मिलता है। सुस्सोन्दी जातक में कुछ ऐसी कथाएँ हैं जिससे विदित होता है कि बनारस के कुछ व्यापारी सुदूरपूर्व में जाते थे और भरूकच्छ से सुवर्णभूमि के लिए जहाज से यात्रा करते थे। महाजनक जातक में मिथिला के राजकुमार महाजनक की

सुवर्ण भूमि की यात्रा का उल्लेख मिलता है। उसकी माँ मिथिला के राजा अरिठ्ठजनक के पोलजनक द्वारा वध करने पर ~~के लिए~~ चम्पा आ गयी जहाँ एक ब्राह्मण विद्वान ने उसे शरण दी थी। अपनी माँ से संचित धन का आधा भाग लेकर वह सुवर्णभूमि के लिए कुछ व्यापारियों के साथ प्रस्तुत हुआ था।

पाली धार्मिक ग्रन्थ "निद्देश में "सुत्त निपात" पर व्याख्या की गयी है। इसमें 24 स्थानों और 10 कठिन मार्गों का उल्लेख है। जहाँ व्यापारी समुद्र मार्ग से जाते थे। जिन 24 स्थानों का उल्लेख है वे सब सुवर्णभूमि अथवा सुवर्णद्वीप के अन्तर्गत थे। इस आधार पर यह इसवी की प्रथम शताब्दी के व्यापारियों के व्यापारिक परिस्थितिओं के सम्बन्ध चित्र चित्रित किया गया है।

मिलिन्दपन्हों नामक पालि ग्रंथ में भी सुवर्णभूमि का उल्लेख मिलता है इसमें विदेशों के कुछ व्यापारिक केन्द्रों का विवरण है

संस्कृत और प्राकृत साहित्य →

संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुदूरपूर्व के देशों का उल्लेख मिलता है। वृतान्त से पता चलता है कि कौटिल्य के समय में मलाया सुवर्णद्वीप तथा अन्य निकटवर्ती देशों के साथ भारतीय व्यापार होता था। वृतान्तों से यह भी पता चलता है कि सवर्ण की खोज के लिए जल और स्थल से भौगोलिक कठिनाईयों को पार करते हुए भारत से बहुत से व्यक्ति सुदूरपूर्व जाते थे। कठिन मार्गों और असुविधाओं का उल्लेख

जातक कथाओं, वायुपुराण, मत्स्यपुराण इत्यादि में वर्णन मिलता है।

वायुपुराण के अतिरिक्त अन्य पुराणों में वृहत्तर भारत अन्य द्वीपों का वर्णन मिलता है। इनमें नवमार्गों का विवरण है " महाभारत तथा जातकग्रन्थों में भी इसका उल्लेख किया है। रामायण में भी सुवर्णद्वीप के द्वीपों का उल्लेख मिलता है रामायण में सुवर्ण और रुक्मण - रत्नाकर द्वीपों का संकेत है इसके आगे क्षेमेन्द्र की रामायणमंजरी में कुसुम द्वीप का उल्लेख है जिसकी समानता टिरिला के 'पारसमुद्र" से की जा सकती है और इसके अपभ्रंश के रूप में "सुमुत्र" से सुमात्रा पड़ा। अतः रामायण में यव अथवा जावा और सुमात्रा का उल्लेख मिलता है।

(2) विदेशी वृतान्त :-

(a) यूनानी रोम वृतान्त :- यूनानी तथा रोम स्रोतों में भी सुवर्णभूमि के द्वीपों और उसके भारत के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है। पामपोनियस मेला ने सम्राट क्लाडियस के राजकाल में सर्वप्रथम अपने ग्रंथ "दि कोरोग्राफिया" में क्रैरसे (सुवर्णद्वीप) का उल्लेख है और पेरीप्लस में भी इस द्वीप का उल्लेख किया है।" तथा अन्य लेखकों ने प्लिनी ने भी इसका वर्णन किया है। इसका उल्लेख किया है।

तालमी ने क्रैरसे के स्थान पर क्रैसे से लिखा है जो "सुवर्णभूमि" का मूल अनुवाद है। जिससे द्वारा सुवर्ण द्वीप का संकेत मिलता है। इसके अतिरिक्त अरबी और चीनी लेखकों ने भी इन द्वीपों का उल्लेख किया है।

अरबी और चीनी वृतान्त → अरबी लेखकों में अलबेरुनी ने सुवर्णद्वीप और सुवर्णभूमि का उल्लेख किया है। यहाँ पर

मिट्टी को धोने से सोना प्राप्त होता था। अन्य अरबी लेखकों ने
इब्न-याकूत, शरीफ़ी, तथा अबुल फ़िदा दिमशकी इत्यादि ने 'जाबाग'
अथवा सुवर्णभूमि का उल्लेख किया है बुखारी के अनुसार सुमात्रा
के पश्चिमी भाग का फनसूर जो सोने की भूमि था।"
जिसका [illegible] सुवर्ण-भूमि से उत्पन्न मिश्र
चीनी यात्री भी सुवर्ण-भूमि का उल्लेख किया है जिसकी
था। इत्सिंग ने भी सुवर्णद्वीप का उल्लेख किया है।
समानता उसने श्री-वि-जे-य अथवा श्री विजय से की है उल्लेख
चीनी तथा अरब लेखकों ने नारिकेल द्वीप का उल्लेख
किया है। स्वानच्वांग के अनुसार यहाँ के निवासी केवल नारियल
पर आधारित थे। लंका से लगभग 1000 ली की दूरी पर था।
तिब्बती स्रोतों के अनुसार धर्मपाल और दीपांकर अतीश
क्रमशः 7वीं शताब्दी में सुवर्ण द्वीप गये थे।

(3) पुरातात्विक स्रोत —

साहित्यिक एवं विदेशी वृतान्तों के साथ-साथ पुरातात्विक
पुरातात्विक सामग्री का शरण लेना अति आवश्यक है। स्मारक, मंदिर, मूर्ति, सिक्का, मुहर
सामग्रियों वहाँ से प्राप्त स्मारक, मंदिर, मूर्ति, सिक्का, मुहर
इत्यादि के अध्ययन से द० पू० ए० के इतिहास पर प्रकाश डाला
जा सकता है। सुंगाईबाटू (केडा) के गुनुङ्ग जेराई पर्वत के राज्य में एक हिन्दू
मंदिर का अवशेष प्राप्त हुआ है जो प्राचीन काल के हिन्दुओं की
याद दिलाती है। इसका तिथि निर्धारण कठिन है
केडा में बौद्ध विहार भी मिला है। एक विष्णु मंदिर का भी
अवशेष मिला है जो लगभग 7 शताब्दी की है। इस प्रकार
बहुत से मूर्ति, स्मारक मिली है जिससे वहाँ की सांस्कृतिक
धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन के बारे में प्रकाश डालती है।
बोर्नियो में कुटेई(?) के लेख तथा
स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। स्तम्भ के लेख में बहुसुवर्णक का उल्लेख
मिलता है तथा जावा द्वीप में देवों का उल्लेख है। द० पू० ए०
के भारतीय संस्कृत का उल्लेख सेलिबीज नाम द्वीप के समुद्री
नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। सुमात्रा से सम्बन्धित बहुत से
कोई अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं। एक मुहर भी प्राप्त हुआ

जिस पर विष्णुगुप्त अंकित है। लेखों से विदित होता है कि यहाँ के निवासियों को संस्कृत भाषा और साहित्य का अच्छा ज्ञान था। खुदाई से यह भी पता चलता है कि 7 वीं शताब्दी तक सम्पूर्ण देश [illegible] भारतीय उपनिवेश ही था।

अतः उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन भारत के इतिहास जानने में साहित्यिक विदेशी एवं पुरातात्विक स्रोतों महत्वपूर्ण योगदान है। उपर्युक्त स्रोतों साधनों के अभाव में इतिहास की जानकारी पाना असंभव है। इन साधनों के द्वारा ही भारतीय संस्कृति, कला, धर्म, का प्रसार-प्रचार किया।